आगामी विश्वयुद्धकाल में परिवार एवं समाज
की रक्षा हेतु, तथा सामान्यतः भी उपयुक्त ग्रन्थ !

अग्निहोत्र

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापना के उद्घोषक
सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ
श्रीमती प्रियांका सुयश गाडगीळ

सनातन संस्था

सनातन की ग्रन्थसम्पदा की अद्वितीयता !

सनातन के अधिकांश ग्रन्थों में प्रकाशित लगभग २० प्रतिशत भाग ‘सूक्ष्म से प्राप्त दिव्य ज्ञान’ है एवं वह पृथ्वी पर उपलब्ध ज्ञान की तुलना में अनोखा है !

ग्रन्थ के संकलनकर्ता का परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्य का संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था' की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्ति के लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्ग की निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से ३.२.२०२५ तक १३० साधकों को सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४९ साधक सन्तत्व की दिशा में अग्रसर हैं ।

३. देवता, साधना, राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विषयों पर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिंदुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात' के संस्थापक-संपादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र की (ईश्वरीय राज्य की) स्थापना का उद्घोष (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तर पर दिशादर्शन !

७. भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार हेतु 'भारत गौरव पुरस्कार' देकर फ्रान्स के संसद में सम्मान (५ जून २०२४)

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी की आध्यात्मिक उत्तराधिकारिणियां !

सद्गुरु (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजी एवं सद्गुरु (श्रीमती) अंजली गाडगीळजी सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी की आध्यात्मिक उत्तराधिकारिणियां हैं । जीवनाडी-पट्टिका वाचन द्वारा सप्तर्षि ने की आज्ञा के अनुसार १३.५.2020 से सद्गुरु (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजी को 'श्रीसत्‌शक्ति' एवं सद्गुरु (श्रीमती) अंजली गाडगीळजी को 'श्रीचित्‌शक्ति' की उपाधि से सम्बोधित किया जा रहा है।

सनातन के सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधकों की अद्वितीयता !

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ

श्रीमती प्रियांका सुयश गाडगीळ

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधक पृथ्वी पर कहीं भी उपलब्ध नहीं, ऐसे अध्यात्म के विविध विषयों पर गहन अध्यात्म-शास्त्रीय ज्ञान सूक्ष्म से प्राप्त करते हैं । वे कोई घटना, धार्मिक विधि, यज्ञ आदि का सूक्ष्म परीक्षण भी करते हैं। ईश्वर से प्राप्त यह ज्ञान ग्रहण करने के लिए उन्हें आसुरी शक्तियों के आक्रमणों का भी सामना करना पडता है । ऐसा होते हुए भी गुरुकृपा के बल पर वे यह सेवा करते ही हैं ।

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिन्ह से दर्शाए हैं ।)

१. तृतीय विश्वयुद्ध की भीषणता तथा उसपर उपचार १२

२. साधकों के साथ ही सामान्य जनता के भी प्राण बचाने हेतु परात्पर गुरु डॉक्टरजी द्वारा सुझाए गए उपचार १२

* अणुयुद्ध से उत्पन्न प्रदूषण से संरक्षण के उपचार १२

३. अग्निहोत्र १३

३ अ. अग्नि का महत्त्व १३

३ आ. व्याख्या ३ इ. अग्निहोत्र के प्रवर्तक १५

३ ई. परमसद्‌गुरु श्रीगजानन महाराजजी की शिक्षा का मूल्य १५

३ उ. पंचसाधनमार्ग में प्रथम तत्त्व यज्ञ तथा अग्निहोत्र यज्ञ का सर्वप्रथम रूप होना १६

३ ऊ. महत्त्व १७

३ ए. लाभ २०

३ ऐ. अग्निहोत्र का स्वरूप और प्रक्रिया २२

३ ओ. हवन २३

३ औ. अग्निहोत्ररूपी हवन से उत्सर्जित तीन प्रकार की तेजस्विता ४५

३ अं. परिणाम ४५

३ क. अग्निहोत्र उपरान्त करनेयोग्य कृत्य ४७

३ ख. विभूति ४८

३ ग. अग्निहोत्र तथा दीप से प्रार्थना ५०

३ घ. घर-घर में अग्निहोत्र, यज्ञयाग तथा होम-हवनादि कर्म करना आवश्यक ५०

३ च. अग्निहोत्र कर्म साधना के रूप में करने पर सम्बन्धित विशिष्ट देवताओं के स्तर पर होनेवाले लाभ ५१

३ छ. अग्निहोत्र, होम, हवन, यज्ञ तथा याग ५५

४. वातावरण शुद्धि के सन्दर्भ में अग्निहोत्र, यज्ञ, व्यष्टि साधना तथा समष्टि साधना का महत्त्व ५६

卐 **परिशिष्ट** ५९

टिप्पणियां

१. ग्रन्थ में अन्य सन्दर्भग्रन्थों से तथा लेखन से कुछ सूत्र लिए हैं । ऐसे सूत्रों के अन्त में कोष्ठक में छोटे आकार में सन्दर्भक्रमांक लिखे गए हैं एवं उसका विवरण ग्रन्थ के अन्त में सन्दर्भसूची में दिया गया है ।

२. इस ग्रन्थ में सूक्ष्म ज्ञानसम्बन्धी चित्र 'महर्षि अध्यात्म विश्वविद्यालय' के सौजन्य से दिए हैं ।

卐 ग्रन्थ की भूमिका 卐

आगामी सैकडों पीढियों के लिए उपयुक्त सनातन की ग्रन्थमाला 'आपातकाल में संजीवनी' !

'पूर्व काल में जब व्यक्ति विकारग्रस्त होता था, तब दादी-नानी जैसे घर के बडे और अनुभवी लोग घर पर ही औषधोपचार करते थे । इस कारण रोगी को हर बार वैद्य के पास नहीं जाना पडता था । औषधोपचार की यह पद्धति 'दादीमां का बटुआ' कहलाती थी । यह सरल-सहज और पारम्पारिक पद्धति आज लुप्त हो चली है । इस कारण आज थोडी भी अस्वस्थता होती है, तो व्यक्ति वैद्य के पास जाता है । सनातन की 'आपातकाल में संजीवनी' ग्रन्थमाला के विविध ग्रन्थों का उपयोग कर, अब घरपर भी बिना किसी दुष्परिणाम के सुलभता से उपचार किए जा सकते हैं । ये सभी उपचार-पद्धतियां आगामी सैकडों पीढियों के लिए भी उपयुक्त सिद्ध होंगी । 'ये उपचार श्रद्धापूर्वक करने की सुबुद्धि सभी को हो और उसके लिए सनातन के ये ग्रन्थ घर-घर में उपलब्ध हों', यह ईश्वर के चरणों में प्रार्थना है !' - (परात्पर गुरु) पांडे महाराज, सनातन आश्रम, देवद, पनवेल, महाराष्ट्र. (३.१२.२०१७)

त्रिकालदर्शी सन्तों ने कहा है कि भीषण आपातकाल आनेवाला है तथा उसमें सम्पूर्ण विश्व की भीषण जनसंख्या नष्ट होगी । वास्तव में अब आपातकाल आरम्भ हो चुका है । आपातकाल में तीसरा विश्वयुद्ध भडक उठेगा । द्वितीय विश्वयुद्ध की अपेक्षा वर्तमान में विश्व के लगभग सभी राष्ट्रों के पास महासंहारक परमाणु अस्त्र हैं । ऐसे में वे एक-दूसरे के विरुद्ध उपयोग किए जाएंगे । इस युद्ध में सुरक्षित रहना हो, तो उसके लिए परमाणु अस्त्रों को निष्क्रिय करने के प्रभावी उपचार करने चाहिए । इन परमाणु अस्त्रों से निर्गमित किरणों को नष्ट करने के लिए भी उपचार चाहिए । इसमें स्थूल उपचार उपयोगी सिद्ध नहीं होंगे; क्योंकि बम की तुलना में अणुबम सूक्ष्म है । स्थूल (उदा. बाण मारकर शत्रु का नाश करना), स्थूल और सूक्ष्म (उदा. मन्त्र का उच्चारण कर बाण मारना), सूक्ष्मतर (उदा. केवल

卐 卐

मन्त्र बोलना) एवं सूक्ष्मतम (उदा. सन्तों का संकल्प), इस प्रकार के उत्तरोत्तर प्रभावी चरण होते हैं । स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म अनेक गुना अधिक प्रभावशाली है । इस कारण, अणुबम जैसे प्रभावी संहारक के किरणोत्सर्ग को रोकने के लिए सूक्ष्मदृष्टि से कुछ करना आवश्यक है । इसलिए ऋषि-मुनियों ने यज्ञ के प्रथम अवताररूपी 'अग्निहोत्र' का उपचार बताया है । यह करने में अति सरल तथा अत्यल्प समय में सम्पन्न होनेवाला; किन्तु प्रभावी रूप से सूक्ष्म परिणाम साधने में सहायक उपचार है । इससे वातावरण चैतन्यमय बनता है तथा सुरक्षा-कवच भी निर्मित होता है । सामान्यजन यदि इतना भी करें तो पर्याप्त है । इससे भी अधिक प्रभावी अर्थात सूक्ष्म उपचार है साधना करना । साधना से आत्मबल प्राप्त होता है एवं अपने कार्य को बल मिलता है । सामान्य व्यक्ति को अग्निहोत्र करने से जो लाभ होगा, वही लाभ साधना करनेवाले तथा आध्यात्मिक दृष्टि से ६० प्रतिशत स्तर के प्रगत साधक को प्रार्थनामात्र से साध्य होता है ।

अग्निहोत्र का महत्त्व, उसे करने की पद्धति सिखानेवाला और इतना ही नहीं, उसका सूक्ष्म परिणाम भी समझानेवाला यह कल्याणकारी ग्रन्थ प्रस्तुत कर रहे हैं । श्री गुरुचरणों में प्रार्थना है कि इसके अभ्यास से अग्निहोत्र तथा साधना का महत्त्व सामान्यजनों को ज्ञात हो तथा वे उसे अपने आचरण में ला पाएं । – **संकलनकर्ता**

ग्रन्थ के मुखपृष्ठपर अग्निहोत्र-कर्ता साधक को क्षौम में (पवित्र वस्त्र में) न दर्शाकर, नित्य की वेशभूषा में दर्शाने का कारण

सामान्यतः यज्ञ कहते ही शौचाचार के पालन का दृश्य आंखों के सामने आ जाता है । 'अग्निहोत्र' यज्ञ बंधनमुक्त है । इसलिए आधुनिक युग में इसे स्त्री, पुरुष, बालक, कोई भी सहजता से कर सकता है । यही संदेश समाज को देने के लिए हमने ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर भी अग्निहोत्र-कर्ता साधक को पीताम्बर में न दर्शाकर नित्य की वेशभूषा में दर्शाया है ।